**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# विद्यार्थिया. के व्यक्तिगत एवं शैक्षणिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन

**Laxmi Kumari**
**Research Scholar**
**Deptt. of Education**
**OPJS University, Churu, Rajasthan**

**Supervisor**
**Dr. Davender Kumar**
**Deptt. Of Education**
**OPJS University, Churu, Rajasthan**

## Abstract

समय परिवर्तन का पर्याय है। निरन्तर चलता रहता है। समय के साथ जीने का ढंग भी बदलता रहता है। व्यक्ति के जीवन को प्रकृति सर्वाधिक प्रभावित करती है। प्रकृति व्यक्ति के शरीर, मन, विचार, आत्मा, सभ्यता, संस्कृति, मान्यताआ. और मूल्या. सहित सभी को प्रभावित करती है। प्रकृति के प्रभाव से सभी पक्षा. म. परिवर्तन होता है। किसी व्यक्ति म. जन्म से ही कोई निश्चित मूल्य प्रारूप नहीं होता है, बल्कि वह अपने सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण से कुछ अनुभव प्राप्त करता है। यह व्यक्ति की आयु के साथ बढते जाते हैं एवं इन्हीं अनुभवा. के आधार पर व्यक्ति अपने लिये कुछ सामान्य सिद्धान्ता. का निर्धारण कर लेता है। यह सामान्य सिद्धान्त उसके व्यवहार को दिशा–निर्देश प्रदान करते हैं एवं धीरे धीरे व्यक्ति का विशिष्ट जीवन दर्शन निर्मित हो जाता है। यही सामान्य सिद्धान्त जो कि व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करते हैं तथा जीवन जीने की विशिष्ट कला को जन्म देते हैं, व्यक्ति के "मूल्य" कहलाते हैं।

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# Introduction

आज मानव के जीवन म. भौतिक सुख सुविधा एवं समृद्धि के नाम पर सब कुछ है। ज्ञान विज्ञान व कौशल की उसके पास अंश मात्र भी कमी नहीं है। किन्तु व्यक्तिगत मूल्या. की कसौटी पर स्थिति घोर दिवालियेपन की है। पाठ्यक्रमा. म. व्यक्तिगत मूल्या. की शिक्षा नाम मात्र की है। अनैतिकता एवं मूल्यहीनता के साये पल रही पीढी से हम उच्च आदर्शों, मूल्य के संरक्षण एवं संवर्धन की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?

प्रत्येक व्यक्ति अपने कुछ न कुछ लक्ष्य निर्धारित करता है, जिन्ह. वह प्राप्त करना चाहता है या प्राप्त करने की लालसा रखता है। किसी भी लक्ष्य को पाने के लिये व्यक्ति सफलता की आशा करता है किन्तु कभी कभी वह अपने लक्ष्य को इतना उच्च निर्धारित कर लेता है कि वह उसम. असफल हो जाता है। जब भी वह सदैव ही सफलता अर्जित करता है तो वह निम्न लक्ष्य से संतुष्ट नहीं हो पाता। इस प्रकार इस संबंध म. हुए अध्ययन व्यक्त करते हैं कि आकांक्षा स्तर संज्ञानात्मक प्रकार की अभिप्रेरणा है क्याकि इसम. व्यक्ति अपने कार्य करने के अनुमान म. तथा अपने स्वयं की उपलब्धि स्तर तथा सफलता एवं असफलता के अनुभव म. सन्निहित हो जाता है।

## व्यक्तिगत मूल्य (Personal Values) –

मूल्य एक भावना है जो क्रियाआ. से निर्मित होती है।

**मिल्टन के अनुसार** – "व्यक्तिगत मूल्य ओस की बूंदा. के सदृश्य नहीं हैं जो मौसम के अनुसार दिखाई दे। इनकी जड. प्रत्येक प्राणी म. बहुत गहरी होती हैं तथा इनका वास्तविकता से घनिष्ठ संबंध है।"

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

**सी.वी. गुड के अनुसार** – "व्यक्तिगत मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्यबोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है।"

**वुड्स के अनुसार** – "मूल्य मानव व्यवहार के घटक तथा निर्धारक तत्व हैं। ये आदर्श और ध्येय दोना. का कार्य करते हैं।"[1]

**मरफी, मरफी और न्यूकम्ब** के अनुसार – "मूल्य लक्ष्य प्राप्ति की दृष्टि से निर्धारित किये गये कतिपय दृष्टिकोण हैं।"

**श्री भगवती शंकर शर्मा** के अनुसार – "Value is that which satisfies human desires. All things that satisfy human needs have value or good (urban). The feeling of pleasure in the sense of value, there is no value expect where there is satisficatioh but there have to be certain conditional fulfilled to transform a satisfication in to a value."[2]

**उपनिषद** के अनुसार – "जब तक मानव के मस्तिक म. मानवीय सद्गुणा. का संचार नहीं होगा तब तक उसम. भेद बुद्धि जो अज्ञानता का प्रतीक है, किसी न किसी रूप म. उसे भटकाती रहग़ी।"

**अर्बन** के अनुसार – "व्यक्तिगत मूल्य वह है जो मानव इच्छाआ. की तुष्टि करे।"

व्यक्तिगत मूल्य का संबंध व्यक्ति की पसन्द से है। जिस वस्तु को हम अधिक पसन्द करते हैं उसे हम अधिक मूल्य प्रदान करते हैं एवं उसे प्राप्त करना

---

1 वर्मा, रामपाल सिंह – "शिक्षा तथा भारतीय समाज" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ.सं. 29

2 श्री भगवती शंकर शर्मा, राष्ट्रीय सेमीनार, 21–23 सितम्बर, 2003, पृष्ठ 33

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चाहते हैं। इसी प्रकार की समानता आकांक्षा म. है अर्थात जिस वस्तु को हम मूल्य अथवा महत्व प्रदान करते हैं उसे प्राप्त करने की हमारी आकांक्षा रहती है। इस दृष्टि से मूल्य एवं आकांक्षा म. पारस्परिक संबंध है। किसी वस्तु की आकांक्षा करने का मतलब है कि हमारी नजर म. उस वस्तु का मूल्य एवं महत्व है।

व्यक्तिगत मूल्या. जैसा गुण त्रिकाल सत्य है। उसे काल विशेष की सीमा म. नहीं बांधा जा सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्तिगत मूल्य समाज की दोना. आवश्यकताआ, निरन्तरता और परिवर्तन से जुडी हुई चीज है। व्यक्तिगत मूल्या. की शिक्षा समाज की चुनौतिया. का सामना करने म. हमारी मदद कर सकती हैं। क्याकि व्यक्तिगत मूल्य व्यक्ति की क्रियाआ. को निर्देशित एवं नियंत्रित करता है एवं दिशा दिखाता है।

वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी के युग म. जो भी चुनौतियां हैं, जो भी विभीषिकाएँ हैं, जो भी दुर्बलताएँ या विशेषताएँ हैं, उन सब को देखते हुए मनुष्य के मन को सबल बनाना और जरूरी हो जाता है। आत्मा यदि विचलित होने वाली न हो और मन काबू म. रहने वाला न हो तो भौतिकता की अंधी दौड के बीच म. भी हम अपने व्यक्तिगत मूल्या. की रक्षा कर सकते हैं।

## भारत म. व्यक्तिगत मूल्य के विकास का इतिहास –

(1) **वैदिक काल** – 3500 ई.पू. से लेकर 1000 ई.पू. के युग को वैदिक काल कहा जाता है। गुरूकुला. या वैदिक स्कूला. म. शिक्षा दी जाती थी। इस प्राचीन युग म. व्यक्तिगत मूल्या. पर बल दिया जाता था। इस युग म. धर्म निरपेक्ष, व्यक्तिगत, नैतिक व धार्मिक शिक्षा म. कोई अन्तर नहीं था। प्राचीन भारत म.

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विद्यार्थिया. के शुद्ध आचरण को महत्व दिया गया। सही आचरण का अभिप्राय: नैतिकता था। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यक्तिगत मूल्या. और आध्यात्मिक गुणा. के लिये प्रदान की जाती थी। इन गुरूकुला. म. मानवीय प्रेम ही नहीं प्राणीमात्र के प्रति प्रेम करने पर भी बल दिया जाता था।[3]

(2) **बुद्धकाल** – बुद्धकाल म. बौद्ध मठा. और विहारा. म. शिक्षा दी जाती थी। अध्यापन का कार्य धर्म के साथ नैतिक और मानसिक अनुशासन का पालन सिखाना था। इन विहारा. का दायित्व छात्रा. का दैनिक जीवन म. उनके व्यक्तिगत व्यवहार का उन्नयन करना था। बुद्ध की नैतिक संहिता म. स्वच्छता, पवित्रता, आत्मत्याग, सत्यप्रियता, वासनाआ. पर अंकुश, प्रेम, दया, समानता एवं मन वचन कर्म से अहिंसा मुख्य थे। बौद्धकालीन शिक्षा म. मानवीय शिक्षा समाज के सहअस्तित्व के लिये व्यक्तिगत मूल्या. के विकास पर बल दिया।

(3) **मध्य युग** – इस युग को इस्लामी शिक्षा का युग कहा जाता है। इस्लाम धर्म का अभिप्राय केवल व्यक्ति व खुदा के बीच रिश्ता न होकर व्यक्ति व व्यक्ति के बीच भी रिश्ता है। इस्लाम धर्म भ्रातृत्व एवं समानता पर बल देता है।

(4) **ब्रिटिश काल** – ब्रिटिश कालीन भारत म. निजी विद्यालया. म. धार्मिक शिक्षा दी जाती रही है। किन्तु राज्य ने धार्मिक शिक्षा म. हस्तक्षेप नहीं किया। इस

[3] झॉ एवं श्रीमाली – "प्राचीन भारत का इतिहास", पेज नं. 62–63

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

काल म. रामकृष्ण मिशन, शांति निकेतन, वर्धा शिक्षा (बेसिक शिक्षा योजना) के द्वारा व्यक्तिगत मूल्या. पर बल दिया गया।

(5) **स्वतंत्र भारत म. व्यक्तिगत मूल्या. की शिक्षा** – विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्ण कमीशन, 1948) ने स्वीकार किया कि कल्याणकारी राज्य के रूप म. मूल्या. का आधार सभी धर्मों के मूल तत्व होने चाहिए। डॉ. मुद्लियार (1952–53) की अध्यक्षता म. माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी शिक्षा म. धार्मिक एवं व्यक्तिगत मूल्या. की शिक्षा के बारे म. अपने विचार रखे। 1959 म. भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने धार्मिक, नैतिक व व्यक्तिगत प्रशिक्षण की समिति नियुक्त की। भावात्मक एकता समिति (1961) ने राष्ट्रीय जीवन म. भावनात्मक एकता की स्थापना के लिये व्यक्तिगत मूल्या. की भूमिका को स्वीकार किया। शिक्षा आयोग (1964–66) ने भी व्यक्तिगत मूल्या. की शिक्षा पर जोर दिया।

(6) **भारतीय संविधान के व्यक्तिगत मूल्य संबंधी प्रावधान** – भारतीय संविधान म. व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं जीवन की सुरक्षा संबंधी प्रावधान अनुच्छेद 21 म. हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत मूल्या. की रक्षा का संवैधानिक अधिकार है। इसी प्रकार संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 म. संस्कृति तथा शिक्षा संबंधी अधिकारा. का विस्तृत उल्लेख किया गया है। भारतीय संस्कृति म. व्यक्तिगत मूल्या. को प्राचीनकाल से महत्व मिलता रहा है तथा वर्तमान म. उसे संविधान म. भी विस्तृत रूप से उल्लेखित किया गया है।

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

## आकांक्षा का स्तर (Level of Aspiration) –

आकांक्षा व्यक्ति के द्वारा निर्धारित किया गया वह विशिष्ट लक्ष्य है, जिसकी प्राप्ति के लिये वह प्रयत्न करता है। यह निर्धारण व्यक्ति की योग्यता एवं क्षमता तथा उसकी पूर्ण सफलता व असफलता के द्वारा प्रभावित होता है। वास्तव म. आकांक्षा वह है जो हम अपने जीवन म. कार्य करने से पूर्व लक्ष्य निर्धारित करते हैं। हर व्यक्ति के लक्ष्य पृथक पृथक होते हैं तथा वह अपनी आकांक्षा शक्ति के अनुसार ही उसके कार्य के लिये लक्ष्य का निर्धारण करता है, जिससे वह भविष्य म. अच्छी से अच्छी निष्पत्ति प्राप्त कर सके।

**सोरेन्सन** के अनुसार – "आकांक्षा स्तर व्यक्ति द्वारा स्वयं के लिये विशिष्ट लक्ष्या. का निर्धारण करता है। आकांक्षा स्तर क्षमता व योग्यता तथा पूर्ण सफलता व असफलता से भलीभांति प्रभावित होता है।"

**बोयड** (1952) के अनुसार – "आकांक्षा के स्तर का अर्थ बदलती हुई परिस्थितिया. म. व्यक्तिगत महत्वकांक्षा है, जो कि उसके भविष्य के आधार या कार्य म. दी गई क्रिया का अच्छे से अच्छा लक्ष्य प्राप्त कर सके।"

**बेकर तथा सिंघल** (1957) के अनुसार – "किसी व्यक्ति के द्वारा अपनी निश्चित लक्ष्य एवं निष्पत्ति के लिये संघर्ष करना ही आकांक्षा कहलाती है।"[4]

**हरलॉक** के अनुसार – "अपनी अभिलाषा पूर्ति हेतु एक निष्पत्ति के साथ वृद्धि करते हुए अंतिम तक जाना ही आकांक्षा है।"[5]

[4] Backer and Singhal (1957), Reference Groups, Membership Groups and Attitude change. J. Abnorm. Soc.psychol. 55: 360-64

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

**ड्रेवर** के अनुसार – "अपने आत्म सम्मान को मिलाते हुए एक इच्छित क्रिया वस्तु की रचना, दूसरे शब्दा. म. एक स्तर के समान जो कि एक व्यक्ति के अनुभवा, उसकी सफलता व असफलता के अभ्यास पर आधारित हैं।"

शोधकर्ताआ. ने आकांक्षा स्तर को परिभाषित किया है कि किसी व्यक्ति का क्रिया विशेष पर किया गया कार्य तथा भविष्य म. उस क्रिया को बेहतर करने की इच्छा का अंतर है। आकांक्षा स्तर एक वृहद् तथ्य है जिसको शब्दा. म. बांधना मुश्किल होता है। सही अर्थों म. आकांक्षा वह है जो हम अपने भविष्य म. किसी कार्य को इतना अधिक अच्छा करने का प्रयास कर. कि वह हमारे द्वारा निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति का साधन बन जाए। आकांक्षा स्तर किसी व्यक्ति द्वारा चयनित कार्य की कठिनाई के अनुरूप होता है। कोई व्यक्ति अपनी क्षमताआ. के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करता है किन्तु यह निर्धारण सफलता या असफलता से प्रभावित होता है। सफलता से लक्ष्य के स्तर म. वृद्धि होती है, जबकि असफलता से इसम. कमी होती है। असफलता अर्थात आकांक्षाआ. की पूर्ति न होने से व्यक्तिया. म. हताशाय. या कुण्ठाय. उत्पन्न होती हैं। व्यक्ति के अहम् भाव के कारण सफलता या असफलता आकांक्षा स्तर को गतिशील बनाते हैं।

अत: आकांक्षा व्यक्ति का आत्म चिन्ह् है, जो केवल यही नहीं बताता कि व्यक्ति क्या है, बल्कि यह भी बताता है कि वह क्या बनना चाहता है।

आकांक्षा स्तर के संबंध म. सभी व्यक्ति एक से नहीं होते। जहां कुछ व्यक्ति सदैव उच्च आकांक्षा स्तर रखते हैं, वहीं कुछ निम्न आकांक्षा रखते हैं। कुछ व्यक्ति

[5] Bhargava, Dr. Mahesh and Shah, Late Prof. M.A. : Manual for level of Aspiration Measure, National Psychological Corporation 4/230, Kacherighat, Agra, 5.

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अपना उच्च व निम्न आकांक्षा स्तर निश्चित करने म. असमर्थ होते हैं जबकि कुछ इसके संबंध म. यथार्थवादी होते हैं और अपने पूर्व अनुभव के आधार पर अपना आकांक्षा स्तर निर्धारित करते हैं।

व्यक्ति के आकांक्षा स्तर को मुख्य रूप से दो कारक प्रभावित करते हैं। वातावरण व्यक्तिगत कारका. द्वारा प्रभावित हुआ माना जाता है। वातावरण म. अभिभावका. की महत्वकांक्षा, सामाजिक आकांक्षा, सफल व्यक्ति का प्रभाव, संस्कृति, सामाजिक मूल्य, प्रतिस्पर्धा इत्यादि आते हैं। जबकि व्यक्तिगत आकांक्षा स्तर म. इच्छाय, व्यक्तित्व, पूर्व अनुभव, मूल्य व रूचि, लिंग, सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि व कुल, वंश व परिवार की पृष्ठभूमि आती हैं।

कार्यों की सफलता व असफलता आकांक्षा स्तर को उच्च व निम्न श्रेणी का बनाती हैं। जब विद्यार्थी को एक परीक्षा म. सफलता मिल जाती है तो वह आगे होने वाली परीक्षाआ. को उत्तीर्ण करना सुगम समझता है किन्तु इसके विपरीत यदि किसी विद्यार्थी को असफलता मिलती है तो वह विद्यार्थी उत्साह खो बैठता है, जिससे उसका आकांक्षा स्तर निम्न हो जाता है।

आकांक्षा स्तर पर समूह तथा सामूहिक कारक का विशेष प्रभाव पडता है। फेस्टिंगर ने प्रयोग द्वारा यह बताया कि व्यक्ति अपने कार्यों की तुलना उन्ह. दूसरा. से समायोजित करके करता है। आकांक्षा स्तर व्यक्तित्व की विशेषताआ. पर निर्भर करती है जिसम. अहम तथा संयोग का प्रमुख स्थान है।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थिया. के सम्पन्न तथा विपन्न वर्ग म. व्यक्तिगत मूल्या. तथा आकांक्षा स्तर पर अध्ययन शोध की दृष्टि से कम हुआ है।

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अत: मूल्यगत शिक्षा के क्षेत्र म. विद्यार्थिया. की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधानकर्ता ने सम्पन्न एवं विपन्न विद्यार्थिया. (प्राथमिक स्तर पर) को अपना शोध का विषय बनाया है।

# सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Agrawal V. : Value System and Dimensions of University Students of U.P. Ph.D. Luc. U. 1959

2. Anbarasu M. : Value Orientation in English language text books of Upper Primary Schools, M.Phil. Edu Alagappa Uni. 1992

3. Baj Pai, Anita : An Experemental study of an educational Intervention Curriculum for Personal value development and its facilitative effect upon the development of Moral Judgement Ph.D. Edu. Uni. of Lucknow 1991

4. Banui, Buotsu : A Study of the Personal values of college students in Nagaland in relation of their Self Concept Ph.D. Edu. North-Eastran hill Uni. 1992

5. Dubey, Ramjee : A Critical Study of the Concept and Implementation of value Education in India of Schools level since 1947 to 1986 Ph.D. Edu. Patna Uni. 1992

6. Goswami N.S. : A Study of Personal value orientation of post Basic Schools in Gujrat Ph.D. Edu. S P U 1983